P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्राथमिक स्तर की शालाओं में सेवारत शिक्षिकाओं के आकाँक्षा स्तर पर वैवाहिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन

सारांश

प्राथमिक स्तर की शालाओं में विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर के लिए यह आवश्यक है कि उनकी व्यवसायिक दृष्टिकोण, काम करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण, व्यवसायिक अभिवृत्ति, संस्था के प्रति दृष्टिकोण के अन्तर का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है प्रस्तुत शोधार्थी द्वारा जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर की सेवारत विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर पर वैवाहित स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

काशी नरेश सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर, म.प्र.

भावना सोनेजी
प्राचार्या,
डॉ. राधाकृष्णनन् कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
जबलपुर, म.प्र.

मुख्य शब्द : प्राथमिक स्तर की शालाओं, विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाएं।

प्रस्तावना

'मातृमान पितृमान चार्यवान पुरुषों वेंद'

प्राचीन काल से ही गुरु का परिवार और समाज में सबसे ऊँचा स्थान रहा है। वैदिक काल से लेकर रामकृष्ण–परमहंस तक ऐसे अनेक शिक्षकों के नाम उल्लेखनीय है जिन्होने अपने छात्रों का भविष्य निर्माण करने में सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग कर दिया।

"गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु गुरु देवोमहेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहा है –

मातृ देवो भव पितृ देवो भव आचार्य देवो भव'

सुप्रसिद्ध कवि कबीर दास जी के अनुसार–

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागे पाय।
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।।"

मनु–स्मृति– शिक्षा पद्धति में सावित्री को माता एवं आचार्य को पिता कहा गया है।

"तात्राडस्य माता सावित्री पिता त्वाचार्य उच्चते।
(मनुस्मृति 2.170)

कठोपनिषद में ज्ञान प्राप्त करने के लिए अध्यापक का होना अनिवार्य बताया गया है।

नरेणावरेण प्रोक्त एषः सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमान।
(कठोपनिषद 2.8)

"मुण्डकोषनिषद्" का कथन है विद्यार्थी को चाहिए कि वह ज्ञान को प्राप्त करने के लिये स्रुति(वेद) को जानने वाले ब्रह्मनिष्ठ गुरू के पास समित्पाणि होकर जावे– तदिज्ञानार्थ स गुरूमेवभिगछेत् समित्पाणि श्रोत्रिंय ग्रहानिष्ठ।

ज्ञान की तुलना सूर्य से की गयी है जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश के बिना समूचा संसार अंधकारमय है उसी प्रकार ज्ञान की ज्योति के बिना मनुष्य का जीवन भी अन्धकारमय है। यो तो अपने जीवन के प्रथम क्षण से ही मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है किन्तु वह ज्ञान केवल अस्तित्व रक्षा में सहायक होता। जीवन को समृद्ध और प्रगतिगामी बनाने के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है।

बौद्ध काल में यही शिक्षा व्यवस्था मठों एवं थ्वहारों में परिवर्तित हुई पर गुरु का स्थान वही बना रहा। प्रसिद्ध चीनी यात्री व्हेनसांग ने लिखा है कि नालंदा आदि विहारों में अत्यन्त उदयभट्ट आचार्य रहते थे। जो शिष्यों के समक्ष जीवित अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते थे। मध्यकाल में आकर जब इस्लामी युग आया तब गुरू भक्ति का आदर्श इतना उच्च नहीं रहा जितना प्राचीन काल में था।

यदि लोकतन्त्र को जीवित रखना और सफल बनाना है तो प्रत्येक व्यक्ति को एक आधारभूत शिक्षा दी जानी चाहिये। इससे वह अपने सामाजिक

आर्थिक और राजनीतिक पर्यावरण की जानकारी प्राप्त कर सकेगा। इसलिए लोकतंत्र में शिक्षा को सार्वभौमिक और किसी स्तर तक अनिवार्य बनाया जाता है। इसी तथ्य को समझकर ही हमारे संविधान के अनुच्छेद 45 में निर्देशित किया गया है।

जीवन के सभी क्षेत्रों में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की आवश्यकता महत्वपूर्ण है उनके द्वारा एक आदर्श राष्ट्र सुव्यवस्थित समाज एवं उत्तम चरित्र का निर्माण किया जाता है इस कारण यह जानना आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक शिक्षिकायें जो शिक्षण में हैं वे कौन हैं? मुख्यतः शिक्षण में वैवाहिक स्थिति के प्रभाव को देखने हेतु शिक्षिकाओं की वृहद्तर समाज में समायोजन का योगदान क्या है क्या शिक्षिकायें घर से बाहर निकलकर अपनी व्यक्तिगत सन्तुष्टि को त्यागकर शिक्षण एवं पारिवारिक स्थितियों के मध्य पिसती तो नजर नहीं आ रही हैं। यह जानने के लिए शोधकर्ता ने प्राथमिक स्तर की शालाओं में कार्यरत् शिक्षिकाओं का आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन करने का एक प्रयास किया है और इस हेतु परीक्षणों का प्रशासन कर परिणाम प्राप्त किये हैं।

लाइमनन, पेज , लुईस लेवी गौरवाँ (2006)[1] ने आकांक्षा स्तर और शैक्षिक विकल्प एक प्रयोगात्मक अध्ययन शीर्षक पर P-H-D- स्तरीय मान्टरियल से शोध कार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया कि परिकल्पना की भांति शोध के निष्कर्ष भी दर्शाते हैं कि आकांक्षा स्तर शैक्षिक विकल्पों को प्रभावित करते हैं। हमारे प्रयोग में प्रतियोगियों के आकांक्षा स्तर की उच्चता एवं भिन्नता सार्थक रूप में फ्रेम विकल्पों को प्रभावित करती है महिला प्रतियोगियों की नहीं। आकाक्षा स्तर असमानता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

पाल, बाल कृष्ण (2009)[2] ने प्राइमरी शिक्षकों की समायोजन के सन्दर्भ में अध्ययन किया यह अध्ययन दिल्ली के एम.डी.एम.सी. व सर्वोदय विद्यालयों की 416 शिक्षकों पर किया गया। निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

1. प्राथमिक शिक्षिकाओं में पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा कौशल में कमी पायी गयी।
2. एम.सी.डी. के प्राथमिक शिक्षकों की अपेक्षा सर्वोदय विद्यालय की प्राइमरी शिक्षकों में कौशल में कमी को देखा गया।
3. मुख्य रूप से शिक्षण कौशल व स्वसम्प्रत्यय के बीच सार्थक सम्वन्ध नहीं था।

चर

स्वतंत्र चर

वैवाहित स्तर (विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाएं)

परतंत्र चर

आांकाक्षा स्तर

नियन्त्रित चर

25 से 60 वर्ष की शिक्षिकायें

अध्ययन के उद्देश्य

1. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर की सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन।
2. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर की सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि के कारकों ।
   i. व्यावसायिक दृष्टिकोण
   ii. काम करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण
   iii. व्यावसायिक अभिवृत्ति
   iv. संस्था के प्रति दृष्टिकोण के अन्तर का अध्ययन

परिकल्पना

1. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर में सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर की सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर के कारक एवं आदर्शवादी दीर्घकालिक लक्ष्यावधि में सार्थक अन्तर नहीं होता।
3. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर में सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर के कारक (प्रथम, द्वितीय) आदर्शवादी (दीर्घकालिक, एवं अल्पकालिक) लक्ष्यविधि में सार्थक अन्तर नहीं होता।
4. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर में सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर के कारक–यथार्थवादी दीर्घकालिक लक्ष्यावधि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर में सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर के कारक–यथार्थवादी अल्पकालिक लक्ष्यावधि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर में सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर के कारक (चतुर्थ एवं पंचम् का योग) यथार्थवादी (दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक) लक्ष्यावधि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्श

तालिका संख्या –01

वैवाहिक स्थिति	संख्या
विवाहित	200
अविवाहित	200
योग	400

परीक्षण

आकांक्षा स्तर मापनी डॉ. वी.पी. शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता का प्रयोग किया गया है।

विधि (शोधविधि)

प्रतिनिधि कार्य न्यादर्श में चयनित विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं का आकांक्षा स्तर मापनी का प्रशासन किया गया।

फलांकन के उपरांत परिकल्पनाओं की सत्यापन के लिए सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर परिणाम प्राप्त कये जाने को अगली कन्टिका में प्रस्तुत किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की मध्यमान क्रमश 41.24 तथा 39.74 है। अतः मध्यमानो में सार्थक

अंतर नही है। चूकि ज का परिगणित मूल्य 1.63 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 के 1.97 से कम है। अतः यह कहा जा सकता है। कि "प्राथमिक स्तर की शालाओं में सेवारत शिक्षिकाओं के आकाँक्षा स्तर पर वैवाहिक स्थिति का प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः अध्ययन शिक्षिकाओं की मार्गदर्शन मे सहायक होगा।

तालिका संख्या –02

वैवाहित स्थिति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	पी. मान
विवाहित	200	41.24	9.84	1.63	<0.05
अविवाहित	200	39.74	8.64		

स्वतंत्रता के अंश–398

0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर–1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता स्तर–2.59

तालिका संख्या–03

आकांक्षा स्तर के कारक	वैवाहिक स्थिति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	पी.मान
आदर्शवादी दीर्घकालिक लक्ष्यावधि	विवाहित	200	9.82	3.37	1.26	<0.05
	अविवाहित	200	10.23	3.11		
आदर्शवादी अल्पकालिक लक्ष्यावधि	विवाहित	200	9.68	3.78	2.57	>0.05
	अविवाहित	200	8.71	3.78		
यथार्थवादी दीर्घकालिक लक्ष्यावधि	विवाहित	200	11.22	3.63	0.38	<0.05
	अविवाहित	200	11.08	3.69		
यथार्थवादी लघुकालिक लक्ष्यावधि	विवाहित	200	10.53	4.00	2.19	>0.05
	अविवाहित	200	9.69	3.69		

विवेचना

विवाहित शिक्षिकायें घर परिवार के साथ शिक्षण के उत्तरदायित्व की दोहरी भूमिका निभाती हैं, अविवाहित शिक्षिकायें शिक्षण में अधिक समय देती है किन्तु शिक्षण में विवाहित एवं अविवाहित के कार्यों में कोई अन्तर नहीं पाया गया है, तुलनात्मक रुप से आकांक्षा स्तर में जो प्रभाव देखने में पाया गया है तो यह अध्ययन परामर्श एवं मार्गदर्शन आदि देने में सहायक होगा जिससे उनका आकाँक्षा स्तर बढ़े और शिक्षण लाभ मिल सके और विद्यार्थी का सर्वागींण विकास हो और राष्ट्र को सुयोग्य नागरिक मिल सके।

निष्कर्ष

साख्यिकीय गणना एवं परीक्षणों के आधार पर जो आंकड़े एकत्रित किये गये हैं उनका विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर कुछ सटीक तथ्य प्राप्त हुए हैं जिसके सन्दर्भ में आकांक्षा स्तर का विवरण निम्नवत् है–

व्याख्या द्वारा ज्ञात हुआ है कि विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की आकांक्षा स्तर में अधिक अन्तर नहीं होता है किन्तु तुलनात्मक रुप से अविवाहित शिक्षिकाओं में आकांक्षा स्तर अधिक होता है कारण कि अविवाहित शिक्षिकाएं जीवन की तमाम पहलुओं एवं भौतिकता के कारण आकाक्षाएं रखती है।

विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाएं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया हैं अतः यह कहा जा सकता है कि विवाहित शिक्षिकाओं की तुलना में अविवाहित शिक्षिकाओं का आकांक्षा स्तर उच्च रहता है चूंकि वैवाहिक स्थिति का प्रभाव देखने को मिला है तो निष्कर्ष विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन प्रेषण एवं परामर्श में यह आवश्यक होगा कि किस प्रकार यह शिक्षिकायें अपना ज्ञानकोष बौद्धप्रयोग, प्रशिक्षण विश्लेषण संश्लेषण कौशल एवं उपयोगिता का सम्भाव लाभ मिल सके जो विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में सहायक हो और वह सुयोग्य नागरिक बनकर राष्ट्र के निर्माण में अपनी सहभागिता प्रदान कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *माल. एस.–(2001)– पुरुष व महिला अध्यापकों की बुद्धि सामाजिक– आर्थिक स्थिति तथा आकांक्षा स्तर का शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्ध पर एक अध्ययन अप्रकाशित शोध अध्ययन अन्नामलाई विश्वविद्यालय।*
2. *शर्मा, दीपशिखा (2002)– आकांक्षा स्तर बुद्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्थिति का शिक्षण व्यवसाय पर प्रभाव एक अध्ययन प्रकाशित शोध अध्ययन चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ*
3. *हुसैन. एम क्यू(1997) दृनिम्न तथा उच्च आकांक्षा स्तर का शिक्षण कार्य पर प्रभाव एक अध्ययन अप्रकाशित शोध अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़*
4. *इनसाइक्लोपीडिया आफ एजुकेशन*
5. *रोजर्स(1954)– आकांक्षा स्तर पर आयु का प्रभाव*
6. *एन्डरसन एण्ड आदर्श(1944)– आकांक्षा स्तर एवं आयु का सम्बन्ध एक अध्ययन*
7. *मार्टिन (1956)– शैक्षिक उपलब्धि एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सम्बन्ध*
8. *लाइमनन, पेज , लुईस लेवी गौरवाँ (2006) ने आकांक्षा स्तर और शैक्षिक विकल्प एक प्रयोगात्मक अध्ययन।*
9. *श्री अरविन्द कुमार मौर्य (2013)– आदिवासी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के जीवनमूल्य, दायित्ववोध एवं समायोजन का अध्ययन–शोध प्रबन्ध काशी विद्यापीठ 2013.*